महाकविहरिशंकर आदेश के काव्य में प्रकृति चित्रण

DR NARENDER
LECTURER IN HINDI
Govt. Sr. Sec School Kawi Panipat

महाकवि हरिशंकर आदेश जी ने प्रकृति की गोद में बिखरे सौंदर्य को एक माला के रूप में समेट कर स्वच्छंद रूप से चित्रण किया है जिसमें नदियों, तालाबों, पुष्पों,पहाड़ों पर गिरती बर्फ, ऋतुओं इत्यादि के सौंदर्य की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। प्रवासी कवि हरिशंकर आदेश प्रकृति के महान चित्रकार हैं ।उन्होंने लेखनी से काव्य में भारतीय प्रकृति के मनमोहक दृश्यों के जीवंत चित्र उकेरे हैं। इन दृश्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है– प्रकृति का ऋतु –मौसम आधार पर विवेचन तथा प्रकृति काभोगोलिक प्राकृतिक उपादान के आधार पर चित्रण।भारत ऋतुओं का देश है ऋतुओं की विविधता भारतीय वातावरण को रमणीय बना देती है। भारतीय परिवेश पर अनेक ऋतुओं के के प्रभाव को देखकर कवि प्रकृति प्रेम के बखान के लिए लालायित हो उठता है। महाकवि हरिशंकर आदेश जी पर ग्रीष्म ऋतु का अत्यधिक प्रभाव पड़ा ।ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की तपिश से धरती सूख जाती है, आकाश मेघ के बादलों से रहित हो जाता है, पेड़– पौधे झुलस जाते हैं, सरोवर– नदियां, तालाब, पनघट इत्यादि सूख जाते हैं। कवि ने ग्रीष्म ऋतु की इस प्रचंडता का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण किया है तथा इस मौसममेंसलानियों को भारत न आने की सलाह देते हुए कहते हैं–

'' मई जून की लूं प्रखर धरा गगन झुलसाए।

भारत अभी न जाइए रवि अंगार बरसाए।।''1

भारत में मई जून के महीने में ग्रीष्म ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है ।सूर्य किरणों रुपी अंगारों से धरती के तन बदन को झुलसा रहा है जिसके कारण पेड़– पौधे भी कुम्भला गए हैं, कलियां मुरझा गई हैं, आकाश में बादलों से रहित हो गया है ।संपूर्ण भारत तप रहा है ।इन दिनों भारत का भ्रमण नहीं करना चाहिए ।इस प्रकार सूर्य अपनीकिरणों रूपी अग्नि से सृष्टि को झुलसाकर ग्रीष्म ऋतु के प्रति प्रेम भाव प्रकट कर रहा है इस संदर्भ में कवि ने कहा है–

'' पूर्ण युवा ऋतुग्रीष्म की, फूटी पड़ी आग।

झुलसा रहा सृष्टि को रवि–ऋतु का अनुराग।।''2

एवं

''आपहुँच आराम में, चुप निदाघका बाघ।

झुलस गई कलियां सकल,चहुँदिशी बरसती आग।।''3

वसंत के आगमन से प्रकृति सौंदर्य से परिपूर्ण होती है ।प्रकृति में सौंदर्य रूपी यौवन का संचार होता है। पुष्प खिल उठते हैं जो संपूर्ण वातावरण में अपनी महक फैला देते हैं। वृक्ष हरियाली से परिपूर्ण होकर झूम

उठते हैं, उद्यान– वाटिकाएं पुष्पों से महकने लगती हैं, पक्षियों का कलरव मंत्रमुग्ध कर देता है ।पानी में कमलों का खिलनामहाकवि हरिशंकर आदेश जी को प्रभावित ही नहीं करता बल्कि उनके हृदय में समाकर शब्दों के रूप में चित्रित भी होता है उन्होंनेन वसंत ऋतु के आगमन का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत कर प्रकृति सौंदर्य में एक नई स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है–

'' पतझर बीता आ गई, सहसा पुनः बहार।

तरूओं को पहना दिए ऋतु नेद्रुम दल हार।।''4

तपझर ऋतु के बीतने पर वसंत ऋतु के आगमन से प्रकृति में पुनः सौंदर्य का संचार हो जाता है। सभी पेड़– पौधे, लताएं, उद्यान– वाटिका नए पत्तों और पुष्पों से पल्लवित–पुष्पित होकर झूम उठते हैं। प्रवासी कवि आदेश जी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं।उनकी लेखनी से जहां बसंत के मनोभावन दृश्यों का चित्रांकन हुआ है वहीं पतझर के प्रभाव को भीअभिव्यक्ति मिली है।आदेश जी ने पतझड़ ऋतु के समय संपूर्ण वातावरण में जो निरसता व उबाहट का भाव होता है उसका सहज एवं स्वाभाविक रूप में चित्रण किया है। कवि वसंत के सौंदर्य और पतझर की नीरसता की तुलना करते हुए कह उठता है–

'' पतझड़ आयाझड़ गए, पवन प्रताड़ित पात।

मधु ऋतु में पुनि पल्लवित, हो हर तरु का गात।।''5

शरद ऋतु का मादक– मनमोहक वातावरण प्रकृति प्रेमी हृदय महाकवि आदेश जी को सहज रूप में प्रभावित करता है। वे इस सौंदर्य पूर्ण वातावरण में इतने डूब जाते हैं कि उनकी आत्मा से प्रकृति सौंदर्य प्रस्फुटित तो होने लगता है। शरद ऋतु में प्रातः काल संपूर्ण प्रकृति को अपने में आगोश में लेती धुंध को देखकर प्रकृति प्रेमी कवि कहता है–

''बिछा हुआ है झील पर कोहरे का पट स्थूल।

होता वारि न दृष्टिगत दिखे न किंचित फूल।।''6

शरद ऋतु में धुंध ने प्रकृति को ढक लिया है। कहीं कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। सभी जगह कोहरा ही कोहरा छाया हुआ है, इसी को दृष्टिगत कर सहृदय कवि कहता है–

''छाया है चारों तरफ प्रातः गहरा धुंध।

चले गाड़ियां मार्ग पर, परंतु अंधाधुंध।।''7

शरद ऋतु में हिम–वर्षा का यथार्थ चित्रण करते हुए कवि कहता है कि वर्षा ने प्रत्येक स्थान को अपने में समेट कर हिममय बना दिया है।यथा–

पूर्णतया हिमआवरित,खेत और खलिहान।

दूर–दूर तक हिम पटे दिख रहे मैदान।।''8

महाकवि हरिशंकर आदेश जी भ्रमणशील प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की है।आदेश विशेषकर भारत, अमेरिका, कनाडा, त्रिनिदाद इत्यादि के प्रकृति सौंदर्य से विशेष रूप से प्रभावित हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के बहुआयामी रंगों को आदेश जी ने काव्य में सजीव कर पाठकगण के सामने प्रस्तुत किया है ताकि वह भी प्रकृति सौंदर्य की बहुआयामी रंगों में रंग जाए ।जैसे महाकवि आदेश जी को ट्यूलिप के पुष्प अति प्रिय हैं इनकी सुंदरता से आकर्षित होकर कवि आनंद विभोर हो कहता है–

''एक वर्ष पश्चात फिर, मेरे आंगन आए।

दिखा रहे निज छवि,रुचिर ट्युलिप अति हर्षाए।।''9

धूप में ट्युलिप के सुंदर पुष्प मुरझाते नहीं बल्कि गर्व से भरी मुस्कान के साथ खिले हुए हैं यथा–

'' भरी दुपहरी में खड़े शीश उठाए सगर्व।

येट्युलिप के फूल ज्यूँ मना रहे हों पर्व।।''10

आदेश जी के हृदय में ट्रिनिडाड के प्रति अथाह प्रेम है। यहां के प्रकृति सौंदर्य को देखकर आदेश मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और यहीं पर इन्हें आत्मिक शांति मिलती है। यहां के प्रकृति सौंदर्य को देखकर कवि के हृदय में इसके प्रति अनुराग जागृत हो जाता है।

'' हरा–भरा रहे वर्षभर देश में सदाबहार।

प्रथम दृश ट्रिनिडाड प्रति,उपजाता है प्यार।।''11

प्रथम दर्शन मात्र से ही कवि को इससे अपार प्रेम हो जाता है कवि का मन कनाडा, अमेरिका को छोड़ कर यहां बार–बार आने को करता है। ट्रिनिडाड के उत्तर दक्षिण के मध्य प्रकृति सौंदर्य से परिपूर्ण पहाड़ खड़े हैं जो इस की प्राकृतिक विपदाओं से रक्षा करते हैं। कवि का मन इसके प्रति श्रद्धा से भर जाता है–

''उत्तर–दक्षिण– मध्य में, खड़े हैं रम्य पहाड़।

रक्षा कर तूफ़ान से,होने दें न उजाड़।।''12

महाकवि हरिशंकर आदेश जी का हृदय प्रकृति प्रेम से ओतप्रोत है वे जिस स्थान का भ्रमण करते हैं वहां के प्रकृति सौंदर्य को अपनी कलम द्वारा शब्दों में संजो कर पाठकगण के सामने सहज एवं स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत कर देते हैं। इस प्रकार उनके प्राकृतिक उपादान पेड़–पौधे, सर सरिता, पवन पहाड़, रेगिस्तान इत्यादि सजीव हो उठते हैं–

'' पेड़ मित्र हैं मनुज के, इनको करिए प्यार।

कभी व्यर्थ मत कीजिए, पेड़ों का संहार।।''13

वृक्षों के आंचल में हंसते मुस्कुराते बच्चे के समान फूल खिले हुए हैं वायु अपने शीतल प्रवाह से इन फूलों को इस प्रकार हिला डुला कर झुला रही है जैसे किसी वस्त्र से इन्हें हवा दी जा रही है।जैसे–

''तरु–वृत्तोंकी गोद में, हंसते शिशु सम फूल।

शीत–समीरण झल रहा, वसन डुलाए दुकुल।।''14

बर्फ आवृत खेत–खलिहानों के अपूर्व प्रकृति सौंदर्य का चित्रणकरते हुए वे कहते हैं–

''चारों ओर बिछी हुई,बर्फ इस तरह श्वेत।

बिछा हुआ श्वेताम्बर,ढके खेत के खेत।।''15

इस प्रकार बर्फ आवृत्त खेतों और खलिहानों का अपूर्व सौंदर्य दृष्टिगोचर हो रहा है।कवि आदेश ने प्रकृति का आलम्बन एवं उद्दीपन दोनों ही रुपों का मनभावन चित्रण किया है।उद्दीनगत प्रकृति का एक ही उद्देश्य होता है–मन में स्थित भावों को उद्दीप्त करना।प्रकृति का सौंदर्य जहां संयोगावस्था में सुख को बढाने का काम करती हैवहीं वियोगावस्था में वेदना को भी चरमोत्कर्ष पर पहुँचा देती है।आदेश जी ने उद्दीपनगत प्रकृति के बड़े सुंदर बिंब प्रस्तुत किए हैं।

ग्रीष्म ऋतु की प्रखरता भी प्रेमियों पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाती बल्कि उनके प्रेम कोद्विगुणित करदेती है,इस भाव को कवि ने सुंदर शब्दों में संजोते हुए कहा है–

''स्वेद सलिल सरि बह रही,आग उलीचे व्योम।

किंतु प्रेमियों का कभी, जले न कोई अंग।।''16

जबकि शरद ऋतु में कंपकंपा देने वाली ठंड भी विरहणी के दग्ध हृदय को शांत नहीं कर पाती है–

''पटावरित कृष गात में,भरे कंपकपी शीत।

विरह–विदग्धा क्या करे,दूर बसे हैं मीत।।''17

कवि आदेश ने प्राकृतिक उपादानों पर मानवीय चेष्टाओं का आरोपण करके एक ओर जहां अपनी कल्पना शक्ति का परिचय दिया है वहीं वे प्रकृति और मानव में साम्यता प्रकट करने में भी सफल हुए हैं यथा–

''खग दल काल कलरव करें,करें विप्र ज्यूं गान।

पवन गाए नित आरती,रविकी पुलक विहान।।''18

उपर्युक्त दोहे में कवि ने कहा हैकि जिस प्रकार ब्राह्मण प्रातःकालमंत्रों का उच्चारण करते हुए भगवान के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट करते हैं,उसीप्रकार पक्षी भी मंत्रोच्चार करते जान पड़ते है।

अतः उपर्युक्त विवेचन के प्रकाश में कहा जा सकता है कि आदेश जी ने काव्य में प्रकृति की जो छटा बिखेरी है,वह अनुपम एवं अविस्मरणीय है।आदेश जी ने जिस भी स्थान का भ्रमण किया,वही के प्रकृति सौंदर्य को आत्मसात कर शब्दों के रुप में सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की और उनकी लेखनी की धार से प्रकृति सौंदर्य सजीव हो उठा।अतः प्रोफेसर आदेश का प्रकृति सौंदर्य अपूर्व एवं अनुपम है।

संदर्भ सूची–

1प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–38, पृष्ठ संख्या–39

2 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा39,पृष्ठ संख्या–39

3 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–45,पृष्ठ संख्या–39

4 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोह–127,पृष्ठ संख्या–47

5 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–441,पृष्ठ संख्या–179

6 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा –329,पृष्ठ संख्या–68

7 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–322,पृष्ठ संख्या–67

8 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–344,पृष्ठ संख्या–36

9 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–122पृष्ठ संख्या–47

10 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोह–121पृष्ठ संख्या–68

11 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–605,पृष्ठ संख्या–67

12 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–344पृष्ठ संख्या–75

13 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–447,पृष्ठ संख्या–80

14 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–398,पृष्ठ संख्या–75

15 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–402पृष्ठ संख्या–75

16 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–43पृष्ठ संख्या–39

17 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–400पृष्ठ संख्या–75

18 प्रोफेसर हरिशंकर 'आदेश',जमुना सप्तशती,दोहा–228पृष्ठ संख्या–58

डॉ0 नरेन्द्र

मकान नं0234/20

आज़ाद नगर,कन्हेली रोड रोहतक